Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. XI, Issue No. XXI, April-2016, ISSN 2230-7540, ISSN 2230-7540

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XI, Issue No. XXI, April-2016, ISSN 2230-7540

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Dr. Ekta Kaushik[1]* Dr. Indira Sharma[2]

[1] Doctorate

[2] Retd. Professor, INPG College, Meerut

सार – *छत्तीसगढ़ का लोक साहित्य अत्यंत समृद्ध है। इसमें लोक साहित्य की समस्त लोक-विधाओं का समाहार है। छत्तीसगढ़ी लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकनाट्य और लोक सुभाषित प्रचुर परिमाण में मिलते हैं। इस तरह छत्तीसगढ़ लोक साहित्य बहुरंगी और बहुआयामी है जिसमें आदि मानव की अनगढ़ भावनाओं के साथ वैदिक महाभारत रामायण काल से लेकर विविध संस्कृति और सभ्यताओं के उतार-चढ़ाव मिलते हैं। लोक साहित्य की इस संक्रमप बेला में आधुनिक भावबोध और युगीन संस्थित है। छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य की सर्वाधिक संपन्न और लोक प्रिय विधा है छत्तीसगढ़ी लोकगीत। इसमें जीवन के विविध पक्ष और सुख-दुख की अनुभूति व्यापक रूप में मिलती है। मनुष्य के जीवन और हृदय की विकास यात्रा इन्हीं लोकगीतों में समाप्त है। विविध युगों के शाश्वत और विकासशील तत्व जुड़कर सदैव मानव सभ्यता को आकार देते रहे हैं, इस तथ्य का प्रकटीकरप छत्तीसगढ़ी लोकगीतों से सहज मिल जाता है। आवश्यकता है इस दृष्टि से छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की मूल्यांकन की।*

कुंजीशब्द – *छत्तीसगढ़ी, लोकगीतों लोकगाथा, लोककथा, लोकनाट्य, आधुनिक भावबोध*

----------X----------

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ का लोक साहित्य अत्यंत समृद्ध है। इसमें लोक साहित्य को समस्त लोक-विधाओं का समाहार है। छत्तीसगढ़ी लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकनाट्य और लोक सुभाषित प्रचुर परिमाण में मिलते हैं। इस तरह छत्तीसगढ़ लोक साहित्य बहुरंगी और बहुआयामी है जिसमें आदि मानव की अनगढ़ भावनाओं के साथ वैदिक महाभारत रामायण काल से लेकर विविध संस्कृति और सभ्यताओं के उतार-चढ़ाव मिलते हैं। लोक साहित्य की इस संक्रमप बेला में आधुनिक भावबोध और युगीन स्थितिय संस्थित है।

छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य की सर्वाधिक संपन्न और लोक प्रिय विधा है छत्तीसगढ़ी लोकगीत। इसमें जीवन के विविध पक्ष और सुख-दुख की अनुभूति व्यापक रूप में मिलती है। मनुष्य के जीवन और हृदय की विकास यात्रा इन्हीं लोकगीतों में समाप्त है। विविध युगों के शाश्वत और विकासशील तत्व जुड़कर सदैव मानव सभ्यता को आकार देते रहे हैं, इस तथ्य का प्रकटीकण छत्तीसगढ़ी लोकगीतों से सहज मिल जाता है। आवश्यकता है इस दृष्टि से छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की मूल्यांकन की।

छत्तीसगढ़ी लोकगीत संस्कारों की अभिव्यक्ति है। हमारे अंचल में विविध जातीय और संस्कृति के लोग निवास करते हैं। इस तरह विविध जातियों और उपजातियों में जितने तरह के संस्कार होते हैं, उन सभी अवसरों पर छत्तीसगढ़ी लोक-गीत झर उठते हैं। छत्तीसगढ़ में विशेष रूप से सोहर गीत जन्म से और विवाह गीत के विविध रूप चरण संस्कार गीतों के रूप में मिलते हैं। कुछ लोक भजन मृत्यु से संबंधित है लेकिन यहां मृत्यु के अवसर पर लोकगीत गाने की परम्परा नहीं मिलती है।

छत्तीसगढ़ में विविध धार्मिक सम्प्रदाय, मत मे मिलते हैं। इसमें सगुण भक्ति के अंतर्गत विशेष रूप से राम, कृष्ण, शंकर, गणेश, सरस्वती के साथ आंचलिक देवी-देवताओं की महिमा विपरीत है। इसके अतिरिक्त यहां कबीर पंथी और सतनाम सम्प्रदाय के द्वारा प्रतिष्ठित पंथी गीत निगुपियाँ भजन की श्रेषी में आते हैं। इन दोनों पंथो ने यहा के जन-मानस को नई चेतना प्रदान की है जिसका प्रमाण यहां प्रतिष्ठित एवं जन-मन में रचा बसा छत्तीसगढ़ी कबीर पंथी अर्थात् चैंका गीत और पंथीगीत है। उल्लेखनीय है कि इस क्षेत्र में कबीरदास के पट्ट शिष्य धर्मदास और सतनाम के प्रवर्तक गुरू घासीदास जैसे महान संतो के कारण इस क्षेत्र में कबीर पंथ और सतनाम पंथ का अधिक प्रचार रहा है। इसके अतिरिक्त शिशु गीत, खेलगीत,

www.ignited.in

श्रृंगारिक गीत और विविध अवसरों पर प्रचलित धार्मिक और सांस्कृतिक गीतों की लम्बी परम्परा मिलती है। कहा जा सकता है कि छत्तीसगढ़ी लोकगीत इस धरती के कप-कण में व्याप्त है तथा यहां की संस्कृति प्रकृति की पोर-पोर में बसी है।

छत्तीसगढ़ी में गेय तथा गाथा के रूप में आकार ग्रहण करती है। यहा आध्यात्मिक लोक गाथाएं जन-मन को धार्मिक भावनाओं से ओत-पोत चंदा है, पंडवानी, सरवन, भय,री गोपीचंदा की गाथा इसी कोटि की है जिसमें सार्व-देशिकता और आंचलिकता का पुट है। छत्तीसगढी़ गौरवशाली इतिहास को विवेचित करने वाली लोकगाथाएं यहां की जन-मन की कल्पना-शीलता है। अज्ञात अनाम ऐतिहासिक पुरूषों की वीरता और विलक्षणता कर्म से युक्त है छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं पर डॉ. विजयकुमार सिन्हा ने अच्छा कार्य किया है लेकिन छत्तीसगढ़ी के अज्ञात इतिहास और बिखरे हुए पृष्ठों को संजोने के लिए छत्तीसगढ़ी लोकगाथा अनुवेषक की बाट जोह रहा है। इसी भाति वीरता और प्रेम को केन्द्र में रखकर वीराख्यानक, प्रेमाख्यानक छत्तीसगढ़ी लोकगाथाएं मिलती है, जिसमें लोरिक चन्दा और ढोलामारू उल्लेखनीय है।।

छत्तीसगढ़ी लोक गाथा अत्यंत प्राचीनकाल से यहां प्रतिष्ठित है। दादा-दादी अथवा नाना-नानी अपने पोते पोतियों को अनेक प्रकार की कहानियाँ सुनाकर प्रारम्भ से ज्ञान और मनोरंजन को सम्प्रेषित करते हैं। छत्तीसगढ़ी लोक कथाओं का फलक अत्यंत विराट है। इसमें संस्कृति से लेकर वेद उपनिषद्, महाभारत, रामायण पुराण से विविध युग के राजा-रानी, प्रजा, पशु-पक्षी आदि के अनेक प्रसंग मिलते हैं। कामना है इन लोक गाथाओं में सर्वे भवन्तु सुखिनः कामना है तदनुरूप सुखांत-संयोजना छत्तीसगढ़ी लोक कथाओं की विशिष्टता है।

तथा दार भात चुरगे, मोर कहानी पुरगे से पता चलता है। सुखात सयोजना के साथ श्रम परिहार के लिए या अवकाश के समय को सार्थक बनाने के लिए छत्तीसगढ़ी लोक कथाओं की परम्परा रही है। चूंकि ये प्रायः नई पीढ़ी को ज्ञान अनुभव प्रदान करने के लिए प्रस्तुत किए जाते रहे हैं अतः इनमें सरलता विचित्रता रहस्य-मयता रोमांच और यत्र-तत्र गीतिमय उक्तियाँ समावेषित रहती है। इन लोक कथाओं में मनुष्य के साथ जानवर भी बोलते हैं। उनके गुणों के अनुसार कथाएँ प्रतिभात्मक रूप में मनोरंजन करने का उपक्रम प्रमाणित होती है।

राम लीला और कृष्ण लीला उत्तरप्रदेश से होकर देश के सभी भू-भागों में फैली। छत्तीसगढ़ में भी राम और कृष्ण के लीलाएँ प्रचलित हैं। बिलासपुर जिले में श्री कृष्ण के रास लीला पर आधारित लोक नाट्य श्रहस के दो रूप छत्तीसगढ़ी और छत्तीसगढ़ी मिश्रित ब्रज भाषा में मिलते हैं। इसमें पहले प्रकार को सतनामी सम्प्रदाय और दूसरे को यहां की सर्वष लोक कलाकार प्रस्तुत करते हैं। इस तरह रहस या रास लीला छत्तीसगढ़ी लोक नाट्य जिसमें ब्रज और छत्तीसगढ़ी संस्कृति का समन्वय है।

इसके अतिरिक्त राजस्थानी की कटपुतली है। बहुरूबियों की प्रचुरता छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य को समृद्ध करने के उदाहरण बनते हैं।

छत्तीसगढ़ी लोक सुभाषित के अंतर्गत छत्तीसगढ़ी प्रहेलिकाएँ, मुहावरे और कहावतें परिगणित किये जा सकते हैं। प्रहेलिका जन मानस के बुद्धि की समीक्षा और उलझन समस्याओं के समाधान के स्वरूप सूत्ररूप में प्रस्तुत करने की सार्थक परम्परा है। इससे लोक मानस की बुद्धि का परिष्कार होता है। स्पष्ट है जहाँ लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा और लोक नाट्य प्रमुखता हमारे भावों को परिमार्जित करते हुए लोक साहित्य बुद्धि को विकसित करते हैं। छत्तीसगढ़ी कहावतें और मुहावरे परम्परा से प्राप्त वे निधि हैं जो जीवन में उक्ति और सूत्र के रूप में सहायक सिद्ध होते हैं। कहावतें पूर्ण वाक्य है जबकि मुहावरे वाक्यांश। दोनों लोक मानस के ज्ञान और अनुभव से उपजी घटनाओं और तथ्यों से भरे पड़े हैं। ये ज्ञान के आमूल्य रत्न है जो विचारों के आदान-प्रदान के समय व्यावहारिक रूप आवश्यक होते हैं। इनके सर्थक प्रयोग से व्यक्ति की पहचान बनती है। भाव और विचार सुस्पष्ट होते हैं। इसी आधार पर इन्हें लोक सुभाषित कहा गया है। स्पष्ट है कि छत्तीसगढ़ी का लोक साहित्य समृद्ध है, व्यापक व बहुरंगी है जो छत्तीसगढ़ी समाज के अस्मिता को अब तक संजोए हुए हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की मूल्यांकन का अध्ययन
2. छत्तीसगढ़ी लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकनाट्य और लोक सुभाषित का अध्ययन

लोकगीतों का महत्व

लोकगीत आदि मानव की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है, एतद् विषय में डॉ. श्याम परमार के विचार द्रष्टव्य है। "उनमें लोक गीतों में द्य प्रकटीकरण की स्वाभाविकता इतनी सीधी और प्रकृति के माधुर्य से पूर्ण होती है कि हमें कृत्रिमता का लेशमात्र भी आभास नहीं होता, सजावट क्या है लोकगीतों के सृष्टा नहीं जानते।... गीतों में विज्ञान की तराश नहीं, मानव संस्कृति का सारल्य और व्यापक भावों का उभार होता है। भावों की लड़ियाँ लम्बे लम्बे खेतों की स्वच्छ, पेड़ों की नंगी डाली सी श्रफ" और मिट्टी की तरह सत्य है।लोकगीतों में निहित आडम्बर हीनता के तथ्य को लक्ष्य कर डॉ. हजारी प्रसद द्विवेदी लिखते हैं कि श्काव्य

उनमें होता है पर भावों की खींचतान नहीं। लोकगीत की एक-एक बहू के चित्र पर रीतिकाल की से मुग्ध अखंडिताएँ और धाराएँ निछावर की जा सकती है, और वे अंलकारों से लदी होकर भी निष्प्राण है। ये अपने जीवन के लिए किसी शास्त्र विशेष की मुखापेक्षी नहीं है और अपने आप में परिपूर्ण है।

लोक-गीतों की परिचय

लोकगीत चिरकाल से मौखिक परंपरा के रूप में चले आ रहे हैं। डॉ. भागीरथ मिश्र का कथन विचारणीय है कि श्प्रकृति ने गाँव के प्रत्येक समाज में कवि उत्पन्न दिये गये हैं। भले ही यह कवि भाषा के डिक्टेटर न हों, किन्तु भावों के डिक्टेटर अवश्य है। प्रत्येक लोकगीत में झलकते हुए भाव, भाषा के बंधन को तोड़कर बरबस हृदय को आकर्षित कर लेते हैं। अहीरों के लिए बिरहे तुलसी ने नहीं बनाये थे, न कहावतों के लिए कहरवा सूरदात ने धोबी, नाई, बारी, पासी ओर कुम्हारों में कबीर, बिहारी, केशव, भूषण, देव और पद्माकर नहीं उत्पन्न हुए थे, पर इन जातियों में भी कविता किसी न किसी रूप में विद्यमान है। अतः हम कह सकते हैं कि लोकगीत अपनी प्रकृति जननी की गोद में ही घुटने टेक-टेक कर चलते रहे हैं।

आदिवासियों में यह सामान्य परंपरा प्रचलित है कि दिनभर की थकान को दूर करने के लिए मनोरंजनार्थ रात्रि में किस एक स्थल पर नर-नारियों का समूह एकत्रित हो जाते हैं। एक व्यक्ति श्टेकश् प्रारम्भ करता है तो दूसरा व्यक्ति उस कड़ी को आगे बढ़ाता है। इस प्रकार कड़ियों की श्रृंखला बढ़ती जाती है एवं लोकगीतों का निर्माण हो जाता है। स्थानीयता का प्रचुर फूट गीतों में कूट-कूट कर भरा रहता है। अतः डॉ. सत्यगुप्त का कथन समीचीन है कि इन गीतों में न कला है न भाषा-सष्ठव और न गीतकारों ने इनकी रचना बंद कमरे में की है। ये गीत तपते हुए सूर्य के नीचे खेतों में काम करते हुए लोक-मानस ने गाये हैं। चूल्हे पर कसर भूनती तथा दीपक जलाती नारी ने गुनगुनाये हैं, जिस अंतर को जो भी स्पर्श कर गया तुरंत वही भाव बोलचाल की भाषा में गीत बनकर फूट पड़ा

लोक गीतों में अलंकृत शैली की अविद्यमानता है। भाषा अपरिष्कृत, अपरिमार्जित, विकृतावस्था में होती है। पंडित रामनरेश त्रिपाठी का कथन है कि इन गीतों की मूल बोली या भाषा के प्रवाह में तैरते चलते हैं। मनुष्य के कंठ ही इनके घाट है, उपर्युक्त कंठ पाकर कोई भी बसेरा ले लेता है, कोई नहीं, कोई कहीं अपने नीड़ में ये गीत पड़े नहीं रहते वरन् न जाने कितने शुष्क हृदयों में सरसता का संचार करते हैं।

लोक गीतों का इतिहास मानव विकास के साथ जुड़ा हुआ है। आदि काल में प्राकृतिक विपदाओं पर विजय पाने के उद्देश्य से मानव ने जिन भावनाओं की अभिव्यक्ति की, उन्हीं से लोक गीतों का प्रारंभ माना जा सकता है। इन लोक गीतों की रचना पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों ने अधिक की है। प्रकृति ने स्वाभाविक रूप से कोमल तथा सूक्ष्म भावनाओं का घर नारी को बनाया है। साथ ही साय सामाजिक विषमताओं के कारण नारी-मानस अनुभूति का क्षेत्र विशाल होता है। डॉ. शकुन्तला वर्मा लिखती है कि श्नारी इन सबके बीच लोक कल्याण और मंगल की भावना लेकर चलती है। वह कितनी ही प्रताड़ित और अस्तय हो, अपने पति और परिवार की मंगल कामना ही करेगी। एक विचित्र मनोबल एवं शिवत्व उसमें आ जाता है। यह नहीं कि चिन्ता, निराशा, दैन्य, सपत्नी द्वेष अथवा परिवारिक कलह और विग्रह की कहानियाँ सुनने देखने में न आती हो। नहीं वे भी आती है। और वे भी गीतों में जीवित है पर वे अपवाद स्वरूप अधिक है। मूलरूप उसका शिव का ही है।

लोक गीत अतीत की वैभव-पूर्ण संस्कृति का उद्घाटन करने में पूर्ण रूपेण समर्थ है। इस सन्दर्भ में डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी का कथन महत्वपूर्ण है कि इनका एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है, एक विशाल सभ्यता का उद्घाटन जो अब तक या तो विस्मृति के समुद्र में डूबी हुई है, या गलत समझ ली गई है।

इस विशाल भारत के भू-भाग में आर्यों के आगमन के पूर्व भी अनेक छोटी-मोटी एवं विस्तृत आर्येत्तार सभ्यताएँ थी। आर्यो की अनार्यों पर विजय के साथ ही आर्यों की राजनैतिक सत्ता स्थापित हो गई, किन्तु यहाँ पर आर्येत्तर सभ्यता का वर्चस्व सर्वत्र था। वह मूल वैदिक सभ्यता से एकदम भिन्न थी उस अपूर्व समृद्ध शाली वैभवपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर से आर्य सभ्यता अछूती न रह सकी। प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों ही प्रकार से आर्येत्तर सभ्यता ने आर्य सभ्यता को प्रभावित किया एवं स्वयं भी उससे प्रभावित हुई। इन आदिम जातियों के गीत इस सभ्यता के वेद श्रुति हैं। वेद भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में श्रुति कहलाते थे एवं एक दूसरे से सुनकर इन्हें स्मरण रखा जाता था। सौभाग्यवश इन आर्यों के ग्राम्य गीतों ने लिपि का स्वरूप धारण कर श्रुति और श्वेदश् की संज्ञा ग्रहण की किन्तु आदिम जाति के गीत श्श्रुतिश् ही बनकर रह गये। जिस प्रकार वेदों के द्वारा आर्य सभ्यता का बोध होता है ठीक उसी प्रकार आदिम जातियों के लोक गीतों के द्वारा आर्येत्तर सभ्यता का ज्ञान होता है। इन आर्येत्तर जातियों ने आर्य प्रभुत्व की स्थापना के मान्यताएँ, विश्वास, धर्म, धारणायें आदि सुरक्षित. है। जिसका प्रत्यक्ष दर्शनआदिम जनजाति के लोकगीतों में आज भी सुरक्षित है।

www.ignited.in

इनमें समग्र जीवन की झाँकी, ज्ञान का विकास एवं मानव विकास के इतिहास के चित्र हैं।

लोक-गीत के प्रकार

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय के अनुसार लोक-गीतों का श्रेणी विभाजन निम्न पांच प्रकार से किया जा सकता है- संस्कार की दृष्टि से सानुभूति की प्रणाली से ऋतुओं तथा व्रतों के क्रम से विभिन्न जातियों के अनुसार श्रम के आधार पर प्रो. श्री चन्द्र जैन ने आदिवासियों के लोक गीतों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया है --

1. करमा गीत
2. सुआ गीत
3. सैल-गीत
4. सजनी-गीत
5. ददरिया गीत
6. वम्बुलिया
7. भजन
8. बिरहा
9. रीना गीत
10. फाग

वस्तुतः लोक विषयक गीत शब्द का अर्थ इस प्रसंग में अभिप्रेत नहीं। लोक गीत लोक में प्रचलित ही होता है, पर इस प्रचलन के दो अर्थ ही हो सकात है, एक तो किसी समय विशेष मात्र में प्रचलित। ऐसा होता है कि कभी कभी कोई गीत कुछ समय के लिए लोक में बहुत प्रचलित हो जाता है यह प्रचलन अस्थाई होता है, कुछ समय उपरांत वह समाप्त हो जाता है। ऐसे अत्यंत अस्थाई गीत लोक गीत के अंतर्गत नहीं आयेगें। दूसरे अर्थ में ऐसा प्रचलन आता है, जिसकी एक परम्परा बनती है, जो कुछ पीढ़ियों तक चलती है, किन्तु ऐसे गीतों के भी दो प्रकार होते हैं। हमें आज भी तुलसी, सूर, कबीर के भजन परम्परा से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आते मिलते हैं। ये गीत भी यथार्थतः लोकगीत की सभा में नहीं आ सकती। लोक गीत तो वह प्रकार है, जिसको ऐसे किसी व्यक्तित्व से संबंधित नहीं किया जा सकता जिसकी मेधा लोक-मानस की स्वाभाविक मेघा नहीं। जब ऐसा है तभी यह प्रश्न प्रस्तुत होता है कि क्या लोक गीत लोक द्वारा निर्मित होते हैं।

अभाववादी व्यक्ति यह मानेगें कि लोक कोई ऐसे सत्ता नहीं जो गीत बना सके। लोक तो मनुष्यों का ही समूह है, उसमें से कोई एक व्यक्ति ही गीत बना सकता है, पर लोक गीत वस्तुतः वहीं हो सकता है, जिसमें रचयिता का निजी व्यक्तित्व नहीं होता वह लोक मानस से तादात्म्य रखता है कि समस्त लोक का व्यक्तित्व ही उसमें उभरता है। वह लोक का अपना गीत होता है, जो परंपरा में पड़ जाता है और परंपरा उसमें समय समय पर अनकल परिवर्तन करती रहती है। से लोक गीतों में एक ओर तो ऐसे गीत हो सकते हैं, जिनमें लोक वार्ता तत्व समाविष्ट हो। ऐसे गीतों मे भू-विज्ञान विद् के लिए बहुत सामग्री के उपकरण जुटाता है। इन दोनों प्रकार के गीतों में लोक संस्कृति के विविध चरण परिलक्षित होते हैं। एक ओर लोक गीत अपौरूषेय भी होते हैं, ऐसे गीत जिन्हें स्त्रियां भी गाती है। विविध अनुष्ठानों के अवसरों पर ये अपौरूषेय गीत गाये जाते हैं। दूसरी ओर केवल पुरूषों को गाने के भी गीत होते हैं। बच्चों के गीतों मे अद्भूत कल्पना का छटाक्षेप होता है अथवा शिक्षा होती है। बालिकाओं के गीत भी अलग मिलते हैं। ये गीत उनके खेलों से संबंधित होते हैं जैसे प्रत्येक अनुष्ठान के साथ कोई न कोई गीत रहता ही है, वैसे ऋतुओं के अनुकुल भी गीत होते हैं। गीतों का संबंध मनुष्य के कामों और गतियों में भी रहता है। चक्की पीसते समय, पैर चलाते समय कोई न कोई गीत गाये जाते हैं। लोककवि ही सदा काल जयी हुआ है, चाहे वह प्रकाशित हो या अप्रकाशित सरल हो या क्लिष्ट। लोक भावनाओं की आत्मसात् कर जो लोक मय होकर जन-जन के कंठों में अनंतकाल के लिए बस जाये, वही सच्चा लोक कवि है और उसके गीत ही सच्चे लोक गीत है। अनाम रहना उनकी अनिवार्य शर्त नहीं वह एक पहिचान भले ही हो। अतः सारे पूर्वाग्रहों को छोड़कर एक विशुद्ध वैज्ञानिक वास्तविक दृष्टिकोण को अपनाकर इस क्षेत्र में कार्य किया जाना चाहिये।

साहित्य की समीक्षा

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों के संदर्भ में छत्तीसगढ़ क्षेत्र के विद्वानों ने अपने शोध-प्रबन्धों में गीतों के विभाजन के अलग-अलग आधार प्रसतुत किये हैं फिर भी प्रमुख लोकगीतों को सभी ने स्थान दिया है। इससे - प्रतिनिधि लोकगीतों के विवेचन में सहायता मिलती है। डॉ. विनयकुमार पाठक, डॉ. भालचंद्र तेलंग, डॉ. शकुन्तला वर्मा, दयाशंकर शुक्ल, डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा आदि के वर्गीकरण महत्वपूर्ण माने जाते हैं। डॉ. विनयकुमार पाठक एवं दयाशंकर शुक्ल ने छत्तीसगढ़ी लोकगीतों के विभाजन नारी, पुरूष और बालक के आधार पर किया है, जबकि डॉ. भालचन्द्रराव तेलंग ने लोकगीतों में प्रबंध काव्य को स्थान देकर इस क्षेत्र में विस्तार किया है। वास्तव में प्रबंध काव्य के अंतर्गत उन्होंने लोकगाथाओं को भी समावेषित है जबकि लोकगीतों के वर्गीकरण में इसे नहीं रखा जा सकता। डॉ. शकुन्तला वर्मा ने भक्ति और

धार्मिक गीतों की गौश रूप दिया है तथा बाल गीतों का अलग से विभाजन नहीं किया है

भालचंगराव तेलंग के अनुसार

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का विवेचना अधोलिखित क्रमानुसार है

1. सोहर- सगुन, सघौरी, व्यथा-भार पीड़ा, प्रसव, जेठानी, देवरानी।

मृत्यु गीत।

प्रबंध गीत

क. पँवारा गीत- गोपल्लागीत, गोपाल राय का गीत, रामसिंग का पँवारा।

ख. प्रेमाख्यान गीत- नगेसर कइना, सरबन गीत और बोधरू गीत।

मुक्तक गीत - ददरिया गीत।

जातीय गीत- बीरम गीत, देवार गीत और बांस गीत। त्योहार गीत- भोजली स्वागत, आरती और जागरप

देवता गीत- ठाकुर देवता, दूल्हा देवता, गिरिजा दुलारी, माता गीत।

मंत्रांनि गीत - महामारी का मंत्र, भूत बाँधने का मंत्र।

अन्य गीत- बारह मासी, सप्ताह के दिनों के गीत, नववर्ष उत्सव, वसुदेवा गीत, सुवा, डंडा गीत का आशीर्वाद, राउत नाच का असीस।

डॉ. शकुन्तला वर्मा का वर्गीकरण इस तरह है --

1. संस्कार गीत

संस्कार मानव विकास और परम्परा का ही इतिहास है। संस्कारों के कारण ही मनुष्य मानवेत्तर प्राणियों से पृथक है। यद्यपि हिन्दू संस्कार में प्रमुख सोलह संस्कारों का वर्णन मिलता है तथापि मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक ये संस्कार घर-बढ़ के साथ प्रचलित है। छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में संस्कार सुरक्षित है। इनमें और प्रतिनिधि छत्तीसगढ़ी संस्कार गीतों का विवेचन यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है -

2. ऋतु मीत

ऋतुएँ लोकगीतों को उष्मा प्रदान करती है। प्रकृति के पल-पल परिवर्तित इस स्वरूप को लोकगीतों में अभिव्यक्त मिलती है। डॉ. मृपालिका झा के अनुसर - ऋतु परिवर्तन से प्रभावित होकर लोक मानस कभी श्रद्धा विभूत होता है तो कभी रहस्यात्मकता को समझकर उसके साथ तादात्म्य स्थापित करता है और साथ समरस हो जाता है. द्य यद्यपि छत्तीसगढ़ी बारह मास गीतों का प्रचलन है तथापि यह एक ही पद में मिल सकता है अथवा ऋतुओं के आधार पर अलग-अलग पद-रचना के रूप उपलब्ध हो सकता है। बसंत ऋतु पर आधारित पक्तियाँ प्रस्तुत है

3. पर्व बीत

छत्तीसगढ़ में जहाँ देश के प्रमुख पर्व प्रचलित हैं, वहीं लोक जीवन से रंजित एवं लोक मानस की आशा एवं विश्वास के प्रतीक विभिन्न पर्व प्रचलित है। छत्तीसगढ़ी पर्व गीतों में भोजली, सुवा, गोरा, करमा मड़ई, होरी, डण्डा और जँवारा गीत प्रमुख है।

4. भक्ति-गीत

छत्तीसगढ़ जहाँ सब सगुण भक्ति के रूप में भोजली जँवारा और गौरा लोक गीत प्रचलित है, वहीं अन्य अनेक लोक भजन राम, कृष्ण, गणेश, दुर्गा सरस्वती और लक्ष्मी के अतिरिक्त विभिन्न देवी-देवताओं की आराधना सगुण भक्ति गीतों की विशेषता है। इसी भाँति रमरमियां सतनामी समाज श्राम-रामश् के नाम महात्म्य को लोक भजन शैली में प्रस्तुत करता है। यह रमरमिया सतनामी समाज पूरे देह में राम-राम का गुदना गुदाकर घूम-घूमकर इस भजन को प्रस्तुत करते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ निर्गुणियाँ भजन मिलता है, जिसमें कबीर पंथ का पर्याप्त प्रभाव है। छत्तीसगढ़ में कबीर पंथियों की बहुलता है और दामाखेड़ा कबीर पंथियों का विश्व प्रसिद्ध धाम है। कबीर पंथी की एक निर्गुणियाँ भजन प्रस्तुत है

5. अन्य गीत

ददरिया- इसके अंतर्गत श्रृंगार परक गीत श्ददरियाश् को रखा जा सकता है। इसे गीतों की रानी कहा जाता है। ग्राम से कोसों दूर वन प्रान्तर या एकान्त प्रदेश में नर और नारी ये गीत अकेले या युगल रूप में गाते हैं। इस तरह संवाद या प्रश्नोत्तर शैली में यह गीत बढ़ता है तो इसे ददरिया का एक प्रकार "सल्हो" कहा जाता है।

www.ignited.in

इसी तरह ददरिया श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग और वियोग से युक्त है। यह मन की मलीनता और आत्मा की निश्छलता को प्रकट करने का माध्यम है। ददरिया, करमा के प्रमुख पद अर्थात् टेक से कड़ी के रूप में जुड़कर सहायक ही नहीं होता, वरन् उसका अंश बन जाता है, इसीलिए लोक साहित्य के मर्मज्ञों ने करमा को छत्तीसगढ़ी लोक गीतों का राजा और ददरिया को रानी स्वीकारा है।

6. पंथी गीत

छत्तीसगढ़ की संस्कृति से यदि अध्यात्म से असंपृक्त कर दिया जाय तो यह वैसा ही होगा, जैसे शरीर से आत्मा को मुक्त कर दिया जावे। छत्तीसगढ़ में आध्यात्मिक आस्था और धार्मिक सद्भाव का सुंदर उदाहरण देखने को मिलता है। यहाँ वैष्पण, शैव, शाक्त, कबीर पंथ, सतनाम पंथ, जैन, बौद्ध धर्मो के अतिरिक्त मुस्लिम और इसाइयों का भी समाहार है। यह धर्म निरेपक्षता का सुंदर क्षेत्र है। इसका उदाहरण यहाँ के आध्यात्मिक लोक गीत है।

हिन्दू बाहुल्य छत्तीसगढ़ में जहाँ वैष्पण, शैव, शाक्त के अनुयायी पर्याप्त हैं, वहीं इस अंचल में जहाँ कबीर पंथ का प्राबल्य है, वहीं गुरू घासीदास द्वारा प्रवर्तित सतनाम पंथ के भी एक जातीय विशेष में पर्याप्त प्रचार है।

गुरू घासीदास ने छत्तीसगढ़ की संत परम्परा को समृद्ध करके और दलितों, उपेक्षितों, अशिक्षितों में जन-आंदोलन और जन चेतना का शंखनाद कर उन्हें और समस्याग्रस्त जीवन से मुक्त कर उन्मुक्त दृष्टि दी, यह निश्चित ही गुरू घासीदास का युगांतर कारी प्रदेय है। इनके ही द्वारा प्रवर्तित सतनाम पंथ की व्याख्या उपदेशों के माध्यम से जिन लोकगीतों में मिलती है, उसे ही प्रमुखतः पंथी गीत कहा जाता है। पंथी गीत में गुरू घासदास का अलौकिक व्यक्तित्व व महान कृतित्व संरक्षित है।

इसमें पंथी लोक गीत का गुरू घासीदास के श्रद्धापूर्वक और भक्तिभाव से ओत-पोत, भावनाएँ पंथी लोक गीतों के प्राप तत्व हैं। इनमें उनके द्वारा निर्दिष्ट सतनाम पंथ, उनका दर्शन ओर महान् संस्कृति के दिग्दर्शन होते हैं। इसके साथ ऋऋऋ ही जय-स्तंभ की महिमा, गुरू वंदना, पूजा-विधि अन्धविश्वास के प्रति चोट, रूढ़ि मान्यताओं के प्रति अनास्थ और सत्विक जीवन के प्रति आग्रह पंथी गीतों का वैशिष्ट्य है। पंथी गीत का उद्भव उस संक्रमण काल में हुआ, जब छत्तीसगढ़ सहित पूरे देश में अराजकता का वातावरण था। शासक प्रजा-विरोधी थे। आम जनता शोषप की शिकार थी। ऐसे समय में गुरू घासीदास का उद्भव जब जब होहि धर्म के हानि की स्थिति में हुआ। यद्यपि गुरू घासीदास द्वारा प्रवर्तित एवं सतनाम पंथ पर आधारित पंथी गीतों की मूल पाण्डुलिपि नहीं मिलती तथापि यह स्पष्ट है कि मौखिक परंपरा के अनुरूप प्रचलित एवं गुरू के मुख से निःसृत पंथी लोक गीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी अर्थात् एक कंठ से दूसरे कंठ में विकसित हुई।

गुरू घासीदास भी कबीरदास जी की - मसि का मीद छुआ नहिं, कलम गहि नहिं हाथ। सदृश अशिक्षित थे, इसके बावजूद उन्हें संसार का पूर्ण लगन था वे बहुश्रुत-बहुल थे तथा उन्होनें साधना और सिद्धि के द्वारा अलौकिकता को अंगीकार कर लिया था।

गुरू घासीदास ने सिद्धि और साधना प्राप्त करने के उपरांत अपने अमृत वचन लोक भाषा छत्तीसगढ़ी में ही व्यक्त किये। उन्होनें उपेक्षित सतनामी जाति को सतनाम पंथ में दीक्षित किया और उनकी ही भाषा में काव्य के रूप में जन-मन को उपदेश प्रदान किया। यही पंथी गीत का उद्भव है। इसी को बार-बार सुनकर और मस्तिष्क में गुनकर सतनामियों ने इसे पंथी गीत के रूप में संजोये रखा। इस तरह गुरू के उपदेश उनके सिद्धांत और व्यावहारिक जीवन में मनुष्य के सफल होने का सूत्र, यही सद्भावना गुरू घासीदास के मूल पंथी गीत कहे जा सकते हैं। मौखिक परम्परा में एक मुख से होकर दूसरे मुख तक पहुंचने और अनेक पीढ़ियों से गुजरते हुए आज यद्यपि उसका भषिक और भावना में अधिक परिवर्तन परिलक्षित है, तथापि उनका मूल उद्देश्य भी विद्यमान है। इसे ही पंथी गीत का आदि स्वरूप और गुरू का अमृत उपदेश माना जा सकता है। गुरू घासीदास के अवसान के पश्चात् इन पंथी गीतों का लोक भजन और आध्यात्मिक छत्तीसगढ़ी लोक गीत के रूप में प्रचार हुआ। भक्ति भाव से बैठकर और मांदर मूंदगः, झाझ से यह लोक भजन सतनामी समाज के मध्य उसी भाँति प्रतिष्ठित हुआ, जिस तरह घर घर लोग बड़ी श्रद्धा और भक्ति से राम-चरित मानस का परायप करते हैं।

उपसंहार

छत्तीसगढ़ मध्यप्रदेश के दक्षिण पूर्व में स्थित कौशल दण्डकारण्य, झारखण्ड, गोंडवाना आदि अनेक नामों से गौरवान्वित रहा है। यहाँ की भाषा छत्तीसगढ़ी रही है। छत्तीसगढ़ लोकसाहित्य अत्यंत समृद्ध है। इसकी लोकविधा लोकगीत तो जन-मन का कंठहार ही है। पंथी-गीत यहाँ का प्रतिनिधि लोकगीत है, जो निरगुनिया लोक भजन के रूप में प्रचलित है। गुरू घासीदास के महान व्यक्तित्व और अलौकिक कृतित्व को मतनाम संदेश के रूप में संचालित करना पंथी-गीत का वैशिष्ट्य है। इसमें कबीर-पंथी लोक भजन चैका गीत का पर्याप्त प्रभाव है। छत्तीसगढ़ी लोक गीत बहुरंगी है। स्त्री और पुरूष प्रधान छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का फलक व्यापक है। इसके बावजूद दोनों के समन्वय से छत्तीसगढ़ी लोक गीत सफल है। इसमें विविध

ऋतुओं, संस्कारों, त्यौहारों, पर्वो के अवसर पर प्रचलित जातीय एवं प्रतिनिधि छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की बहार है। मानो लोकगीत के बिना छत्तीसगढ़ी लोक जीवन की पहचान ही न हो। पंथी-गीत व नृत्य गुरू घासीदास द्वारा प्रवर्तित एव संयोजित है जिन्हें हम अंचल के सतनामी स्वीकार कर धन्य हो गये हैं। इनकी भावनाओं को विकसित करने की दृष्टि से पंथी-लोकगीतों का प्रभाव, नृत्य और पिरामिड के माध्यम से इसका प्रचार और महिलाओं के सहयोग से आकर्षक पंथी लोकगीत-नृत्य को देश-विदेश में लोकप्रिय बनाने में सार्थक प्रयास है।

संदर्भ

1. घासीदास-संपादक-डॉ. विनयकुमार पाठक-शीर्षक-संत गुरू घासीदास के सिद्धांतडॉ. बनवारीलाल सहू,
2. छत्तीसगढ़ के पंथी गीत और बाबा गुरू घासीदास-श्रीमती सुप्रभा झा,
3. भारतीय समाज, संस्कृति तथा सामाजिक संस्थाएँ-दिनेशचन्द्र भारद्वाज,
4. छत्तीसगढ़ के समजिक जीवन पर मुरूघासीदास जी का प्रभाव-डॉ. पदमा डड़सेना,
5. सत्य दर्शन-घनाराम ढिंढे,
6. समाज संस्कृति तथा समाजिक संस्थाएँ, दिनेशचन्द्र भारद्वाज,
7. यादव, राजन. रामकथापरक छत्तीसगढ़ी लोकगीत और जीवन-मूल्य;
8. परिहार, राम (संपा.). रामवनगमन की साहित्यिक निश्ठित.
9. निर्मलकर, बलदाऊ प्रसाद एवं यदु, मन्नूलाल (संपा.). राम और रामकाज;
10. कुलदीप, जगदीष एवं यदु, मन्नूलाल (संपा.). राम और रामकाज;
11. वर्मा, धीरेन्द्र एवं अन्य (संपा.). हिंदी साहित्य कोष

Corresponding Author

Dr. Ekta Kaushik*

Doctorate

kaushik.ekta@gmail.com